P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

महाविद्यालय स्तर पर वाणिज्य संकाय में विद्यार्थियों का घटता आकर्षण
चूरू जिले का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

महेन्द्र कुमार खारडिया
सहायक आचार्य,
एबीएसटी विभाग,
राजकीय लोहिया महाविद्यालय,
चूरू, राजस्थान, भारत

सारांश

क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है। इस राज्य के पश्चिमी भाग में स्थित चूरू जिले में शिक्षा का स्तर बहुत पिछड़ा हुआ है तथा उच्च शिक्षा में वाणिज्य शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों का आकर्षण घटता जा रहा है। अतः शोध–पत्र में राजस्थान के चूरू जिले में उच्च शिक्षा में वाणिज्य संकाय में कम होते रूझान के कारणों का पता लगाकर उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन करके सुधारात्मक सुझाव प्रस्तुत करना है तथा इस अध्ययन में राजस्थान के चूरू जिले में राजकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की प्रवेश क्षमता के आधार पर किया गया है।

मुख्य शब्द : महाविद्यालय, उच्च शिक्षा, वाणिज्य शिक्षा, विद्यार्थी, विश्वविद्यालय।

प्रस्तावना

राजस्थान में विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त 1200 से भी अधिक राजकीय एवं निजी महाविद्यालय हैं। आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा, राजस्थान के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में इस समय 238 राजकीय महाविद्यालय संचालित हैं। इन महाविद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की संख्या में दिनों–दिन तीव्र गति से वृद्धि हो रही है। कला तथा विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की संख्या में बहुत तीव्र गति से वृद्धि हो रही है जबकि वाणिज्य संकाय में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों का आकर्षण तथा रूझान धीरे–धीरे घटता जा रहा है। यह रूझान इनकी प्रवेश क्षमता से स्पष्ट परिलक्षित होता है।

अध्ययन के उद्देश्य

राजस्थान राज्य के चूरू जिले में महाविद्यालयी स्तर पर विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन के लिए अन्य संकाय कला की तुलना में वाणिज्य संकाय के प्रति कम रूझान के कारणों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्यों को शोध पत्र का आधार माना है :–

1. विद्यार्थियों में उच्च अध्ययन के लिए वाणिज्य शिक्षा के प्रति कम रूझान के कारणों का विश्लेषण करना।
2. वाणिज्य शिक्षा (संकाय) का अन्य शिक्षा कला–शिक्षा (संकाय) का प्रवेश क्षमता के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. सरकार द्वारा वाणिज्य शिक्षा के प्रति उदासीन दृष्टिकोण का विश्लेषण करना।
4. वाणिज्य शिक्षा में आकर्षण पैदा करने के लिए सुधारात्मक सुझाव प्रस्तुत करना।

साहित्यावलोकन

भारत में राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य है तथा शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान उतरोतर आगे बढ़ रहा है। प्रदेश में वाणिज्य विषय के प्रति आकर्षण धीरे–धीरे कम हो रहा है। स्कूली शिक्षा में पहले वाणिज्य का महित्वपूर्ण स्थान था व स्कूली पाठ्यक्रम में वाणिज्य को ज्यादा महत्व दिया जाता था परन्तु धीरे–धीरे वाणिज्य का स्थान स्कूली पाठ्यक्रम से कम होता गया तथा बी.एड. पाठ्यक्रम में भी वाणिज्य का स्थान न के बराबर रहा है। आज से पांच दशक पूर्व बागला हाई स्कूल में वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों की संख्या इतनी हुआ करती थी कि प्रवेश के लिए आवेदन करने वाले विद्यार्थियों को बड़ी संख्या में प्रवेश से वंचित रहना पड़ता था। पंडित कुंज बिहारी शर्मा की राजस्थानी पुस्तक ''बाता ही चालै'' के डॉ. सुरेन्द्र डी. सोनी द्वारा किये गये

हिन्दी अनुवाद ''बात कलश'' में उल्लिखित है। स्कूल फल–फूल रहा था। हर वर्ष सौ के करीब छात्र पढ़कर जाते थे। वाणिज्य प्रधान विषय था, लेकिन टाइपराइटर पर्याप्त संख्या में न होने के कारण छात्रों की भरती रूक गई। सतर–अस्सी लड़के बेकार भटकने लगे इस कारण। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर में पंजीकृत छात्रों की संख्या में वाणिज्य संकाय के प्रवेशित विद्यार्थी अन्य संकाय की तुलना में बहुत कम है। इससे उच्च अध्ययन के लिए विद्यार्थी कम होते हैं। यह तथ्य आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा, राजस्थान के सत्र 2008–09 से 2018–19 में प्रवेशित विद्यार्थी की संख्या से सिद्ध हो जाता है। इसी क्रम में जिले के राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरू के द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका ''आलोक'' में प्रकाशित रिपोर्ट में भी कम विद्यार्थियों के बारे में चिंता व्यक्त की गई है।

शोध संरचना

राजस्थान राज्य के पश्चिमी क्षेत्र के चूरू जिले में महाविद्यालय स्तर पर अध्ययन के लिए वाणिज्य विषय के प्रति कम रूझान का विश्लेषण करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीय समंकों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक संमक को प्राप्त करने के लिए महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों से व्यक्तिगत साक्षात्कार, आचार्यों से साक्षात्कार, प्रश्नावली एवं अनुसूची विधियों का प्रयोग किया गया है, जबकि द्वितीयक समंकों एवं सूचनाओं की प्राप्ति के लिए महाविद्यालय की प्रवेश नीति, आयुक्तालय के मार्गदर्शन, विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम आदि को आधार माना गया है।

चूरू जिले जिले में सार्वजनिक क्षेत्र में उच्च शिक्षा का परिदृश्य

शोध–सर्वे की दृष्टि से चूरू जिले में स्थित राजकीय महाविद्यालयों के अध्ययन का क्षेत्र चयनित कर विषय पर ध्यान केन्द्रित किया है। चूरू जिले में प्रमुखतया निम्नलिखित राजकीय महाविद्यालय संचालित हैं :–

तालिका 1.1
चूरू जिले जिले में स्थापित राजकीय महाविद्यालय

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम
1	राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरू (राज.)
2	सेठ मोहन लाल जालान राजकीय महाविद्यालय, रतनगढ़ (राज.)
3	श्रीमती केशरी देवी राजकीय महाविद्यालय, रतनगढ़ (चूरू)
4	राजकीय महाविद्यालय, सुजानगढ़ (चूरू)
5	राजकीय महाविद्यालय, तारानगर (चूरू)
6	राजकीय महाविद्यालय, सरदारशहर (चूरू)
7	राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़ (चूरू)
8	राजकीय महिला महाविद्यालय, तारानगर (चूरू)
9	राजकीय कन्या महाविद्यालय, चूरू (चूरू)

स्रोत : आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा राजस्थान की प्रवेश नीति व वेबसाइट 2017–18

इन महाविद्यालयों में वाणिज्य शिक्षा के प्रति घटते रूझान का व्यापक विश्लेषण इन महाविद्यालयों के कला संकाय के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने के प्रयास किये गये हैं।

तालिका 1.2
राजकीय महाविद्यालयों में संचालित विभिन्न संकाय के कक्षा खण्ड की स्थिति

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	कक्षा–खण्ड स्नातक स्तर पर		
		कला	वाणिजय	विज्ञान
1	राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरू	16	06	04
2	सेठ मोहन लाल जालान राजकीय महाविद्यालय, रतनगढ़	04	03	01
3	श्रीमती केशरी देवी राजकीय महाविद्यालय, रतनगढ़	04	–	–
4	राजकीय महाविद्यालय, सुजानगढ़	10	04	02
5	राजकीय महाविद्यालय, तारानगर	04	01	02
6	राजकीय महाविद्यालय, सरदारशहर	04	01	02
7	राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़	02	–	–
8	राजकीय महिला महाविद्यालय, तारानगर	02	–	01
9	राजकीय कन्या महाविद्यालय, चूरू			

स्रोत : राजकीय महाविद्यालयों की प्रवेश नीति सत्र 2017–18

राज्य सरकार द्वारा आवंटित कक्षा खण्डों में प्रवेश क्षमता की स्थिति को तालिका 1.2 में दिखाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि कला संकाय की तुलना में वाणिज्य संकाय में बहुत ही कम कक्षा खण्ड हैं। राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरू में कला संकाय में 16 कक्षा खण्ड जबकि वाणिज्य संकाय में सिर्फ 06 कक्षा ही कक्षा खण्ड हैं। इसी क्रम में सुजानगढ़ महाविद्यालय में कला संकाय में 10 कक्षा खण्ड व वाणिज्य संकाय में सिर्फ 04 कक्षा खण्ड ही हैं जबकि राजकीय महाविद्यालय, रतनगढ़ में कला संकाय में 04 तथा वाणिज्य संकाय में सिर्फ 03 कक्षा खण्ड हैं। इसी प्रकार राजकीय महिला महाविद्यालय, रतनगढ़, राजकीय महाविद्यालय, रतनगढ़, राजकीय महिला महाविद्यालय, तारानगर में भी वाणिज्य संकाय के प्रति आकर्षण कम होता जा रहा है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या के आधार पर स्थिति

तालिका 1.3

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	संकायवार प्रवेशित विद्यार्थियों की संख्या	
		कला	वाणिज्य
1	राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरू	1280	480
2	सेठ मोहन लाल जालान राजकीय महाविद्यालय, रतनगढ़	320	240
3	श्रीमती केशरी देवी राजकीय महाविद्यालय, रतनगढ़	320	—
4	राजकीय महाविद्यालय, सुजानगढ़	800	320
5	राजकीय महाविद्यालय, तारानगर	320	80
6	राजकीय महाविद्यालय, सरदारशहर	320	80
7	राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़	160	—
8	राजकीय महिला महाविद्यालय, तारानगर	160	—
9	राजकीय कन्या महाविद्यालय, चूरू		—

स्रोत : महाविद्यालयों की प्रवेश नीति एवं विवरणिका सत्र 2017—18

तालिका 1.3 से स्पष्ट है कि राजकीय महाविद्यालयों में अध्ययन के लिए चूरू के सभी महाविद्यालयों में कला संकाय में प्रवेशित विद्यार्थियों की सीटों के आधार पर तुलना करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि कला संकाय में अधिक सीटें आवंटित हैं। कला संकाय के प्रत्येक वर्ग में 80 विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाता है तथा वाणिज्य संकाय में भी 80 विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाता है परन्तु कला संकाय में अधिक वर्ग स्वीकृत होने से अधिक विद्यार्थी प्रवेश पाते हैं जबकि वाणिज्य संकाय में अपेक्षाकृत कम वर्ग स्वीकृत हैं जिस कारण कम विद्यार्थी प्रवेश पाते हैं। इसके साथ ही यदि उक्त वर्णित स्थिति का अवलोकन करें तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि महाविद्यालयों में प्रवेशित विद्यार्थी संख्या में व्यापक वृद्धि हो रही है परन्तु वाणिज्य संकाय में प्रवेशित विद्यार्थी संख्या लगभग स्थिर—सी बनी हुई है तथा कला संकाय की तुलना में वर्ष—प्रतिवर्ष अन्तराल प्रतिशत गिरता ही जा रहा है। वर्तमान स्थिति में वाणिज्य संकाय में स्थिति मात्र 25 प्रतिशत के लगभग ही है।

वस्तुस्थिति की गम्भीरता से अध्ययन के लिए एक लघु प्रश्नावली को आधार बनाया गया तथा प्रत्येक महाविद्यालय से कला एवं वाणिज्य संकाय से 10—10 विद्यार्थियों से सम्पर्क कर उनके रूझान को पहचानने का प्रयास किया गया। प्रश्नावली में कोई भी पूरक अथवा प्रति प्रश्न रखे गये तथा प्रत्यक्ष रूप से सूचनादाताओं से राय जानने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन के मुख्य अवलोकन

उत्तरदाता विद्यार्थीगण से हुई वार्ताओं तथा उनकी प्रत्युत्तर स्वरूप प्राप्त प्रतिक्रियाओं का यदि प्रश्नवार विश्लेषण करें तो सार रूप यह प्रकट हुआ कि विद्यालयी स्तर पर सीनियर कक्षाओं में संकाय तथा विषय चयन के प्रति विद्यार्थीगण स्वयं अबोध अवस्था में रहते हैं तथा किसी भी तरह की परामर्श सेवा के अभाव में दिशाहीन रहते हैं।

संस्थागत स्तर पर भी किसी तरह से शिक्षकों की परामर्श सेवा आमतौर पर उपलब्ध नहीं हो पाती है। अभिभावकगण भी ज्यादा जागरुक नहीं पाये गये अधिकांश तो स्वयं भी ज्यादा शिक्षा के अभाव में इस क्षेत्र से अनभिज्ञता रखते हैं तथा कुछ अपनी ही व्यस्तता के कारण मात्र इतना भर से दायित्व पूरा कर लेते हैं कि जैसी रूचि हो वैसा करो। ऐसी दिग्भ्रमित स्थिति में विद्यार्थी के पास अंधेरे में तीर चलाने के अलावा कुछ भी विकल्प नहीं रहता है। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित अवलोकन मुख्य हैं—

1. विषय चयन को लेकर विद्यार्थीगण में नाममात्र को छोड़कर किसी के पास प्राथमिकता का आधार नहीं पया गया है।
2. भविष्य निर्माण हेतु महाविद्यालय में प्रवेश लेते समय विद्यार्थी को अपने विषय के क्षेत्र विशेष में भविष्य निर्माण को लेकर कोई भी व्यापक सम्भावनाओं का ज्ञान नहीं पाया गया। ज्यादातर उत्तर में यह पाया गया कि वाणिज्य संकाय वालों को बी.एड. में अवसर नहीं हैं अतः वाणिज्य विषय का अध्ययन लाभप्रद नहीं है।
3. विद्यार्थियों को एम.बी.ए., सी.ए., आई.सी.डब्ल्यू.ए. तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की जानकारी तक नहीं है। ऐसी स्थिति में वे सीधे अपना आकर्षण कला संकाय की तरफ कर लेते हैं।
4. संकाय चयन को अपना निर्णय मानते ही नहीं है। अधिकांशतः भीड़ के साथ अनुगमन या फिर मित्र—मण्डली का प्रभाव परिलक्षित हुआ विद्यार्थी अपनी रूचि की पहचान एवं तालमेल का भी अन्दाज नहीं लगा पाते हैं, क्योंकि उनका चयन किसी सुविचारित योजना का भाग नहीं होता है।
5. संकाय चयन की पृष्ठभूमि में मूल कारण को भी कुछ को छोड़कर ज्यादातर प्रकट नहीं कर पाये। विद्यार्थी का आगामी मिशन क्या—कुछ है? इसकी कोई दिशा भी दृष्टिगोचर नहीं पायी।
6. विद्यार्थी समुदाय को विषय चयन का पछतावा भी इसीलिए नहीं हो पाता है कि उसकी सोच यह बन गई कि आगे जो होगा सो देखा जाएगा। विद्यार्थी विषय—संकाय चयन के प्रति गम्भीरता को व्यक्त नहीं कर सके।

सारी प्रतिमूल स्थितियों के बारे में वस्तुस्थिति यह है कि वाणिज्य संकाय में विद्यार्थीगण के घटते रूझान का मुख्य कारण वाणिज्य शिक्षा की समुचित व्यवस्था का अभाव है। वाणिज्य जैसे व्यावहारिक विषय की समुचित व्यवस्था के अभाव ने भी आकर्षण कम कर दिया है।

सुझाव

वाणिज्य जैसे व्यावहारिक, प्रायोगिक तथा दैनिक दिनचर्या में काम आने वाले विषय के प्रति आकर्षण और रूझान में अभिवृद्धि हेतु निम्नलिखित कदम सुधारात्मक दृष्टि से उठाना उपादेय होंगे –

1. संकाय/विषय चयन के समय संस्थागत स्तर पर प्रभावी परामर्श सेवा की व्यवस्था हो।
2. विद्यार्थी के परिवार स्तर पर अभिभावकगण की जागरुकता अपेक्षित है।
3. वाणिज्य विषय के पेशेवर पाठ्यक्रमों की व्यापाक जानकारी देने की व्यवस्था करनी चाहिए।
4. चिकित्सा तथा अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रमों की ही तरह सी.ए., सी.एस., एम.बी.ए. आदि को वाणिज्यिक विद्यार्थीगण के लिये विशिष्ट क्षेत्र बनाया जाये। इसी तरह बैंकिंग–बीमा क्षेत्र की सेवाओं को भी वाणिज्यिक क्षेत्र के लिए विशिष्ट रखा जाये।
5. संकाय चयनोपरान्त सतत् रूप से शैक्षणिक प्रगति एवं व्यक्तिगत मूल्यांकन की व्यवस्था स्थापित हो।
6. वाणिज्य विषय के साथ गणित, अंग्रेजी तथा अद्यतन कम्प्यूटर तकनीक का समावेश हो।
7. प्रतियोगी परीक्षाओं में वाणिज्यिक विषयों को प्रधानता तथा विस्तार दिया जाए।
8. हर स्तर पर काउन्सलिंग की प्रभावी व्यवस्था बनायी जाये।
9. वाणिज्यिक विषयों को आर्थिक, व्यावसायिक तथा औद्योगिक क्षेत्रों के साथ अन्तर्विषयक बनाया जाये।
10. वाणिज्यिक क्षेत्र में रोजगारपरक क्षेत्रों की व्यापक जानकारी दी जाये।
11. वाणिज्य विषयों को अद्यतन बनाये जाने का सतत् प्रयत्न करने का प्रयास किया जाये।

निष्कर्ष

उपरोक्त सुझावों के फलस्वरूप निश्चित ही वाणिज्य विषय के प्रति आकर्षण एवं रूझान बढ़ने वाला है। देश तथा समाज के प्रति इसकी उपदेयता बढ़ेगी। वाणिज्य विषय के प्रति सरकारी स्तर पर भी बढ़ावा देने के प्रयत्न करके प्रचार–प्रसार करना चाहिए तथा स्कूली स्तर पर वाणिज्य विषय को प्राथमिकता से लागू करना चाहिए ताकि स्कूली स्तर पर आकर्षण पैदा हो। महाविद्यालय स्तर पर आने पर अधिक जागरूकता तथा उच्च अध्ययन हेतु वाणिज्य विषय को चयन की प्राथमिकता दें।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम सत्र 2018–19, पृष्ठ संख्या 16, 17, 18

आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा, राजस्थान की प्रवेश नीति सत्र 2017–18 से 2018–19

चूरू जिले में स्थित राजकीय महाविद्यालयों की प्रवेश विवरणिकाएं सत्र 2016–17, 2017–18, 2018–19

राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर

पाक्षिक पत्रिका योजना 2017–18, 2018–19

मासिक पत्रिका कुरूक्षेत्र 2018, 2019

डॉ. सुरेन्द्र डी. सोनी ''बात कलश'' बोधि प्रकाशन जयपुर, 2018

आलोक पत्रिका, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरू (राज.)

वेबसाईट

lcc.ac.in

dce.rajasthan.gov.in